47 (A) - (H)

[Encl. 47]

...oved Journal No - 40957
...mpact Factor- 4.172
... 1687-2006-2007

ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

AN INTERDISCIPLINARY PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Chief Editor : *Indukant Dixit*

Executive Editor : *Shashi Bhushan Poddar*

Editor
Reeta Yadav

Volume 12 April 2019 No. III

Published by
PODDAR FOUNDATION
Taranagar Colony
Chhittupur, BHU, Varanasi
www.jigyasabhu.blogspot.com
www.jigyasabhu.com
E-mail : jigyasabhu@gmail.com
Mob. 9415390515, 0542 2366370

शिक्षित तथा अशिक्षित अभिभावकों में छात्राओं की उच्च शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन

डॉ. अनुभा शुक्ला

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय

राजा हरपाल सिंह पी.जी. कालेज, सिंगरामऊ, जौनपुर

सारांश

शिक्षा ही वह सोपान है जो व्यक्ति और समाज के विकास को मजबूत नींव प्रदान करती है। यह नींव अभिभावकों द्वारा रखी जाती है। अभिभावक यदि बिना लैंगिक भेदभाव के अच्छी उच्च शिक्षा प्रदान करायें तो न सिर्फ महिला बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र समृद्ध हो सकेगा। विश्व आर्थिक मंच द्वारा 18 दिसम्बर 2018 को वैश्विक अंतराल रिपोर्ट (Global Gender Gap Report 2018) जारी की गयी। इस लिंग–भेद सूचकांक (Gender Gap Report) में कुल 149 देशों में भारत को 108वाँ स्थान दिया गया। 2017 में भी भारत का यही स्थान था। इस रिपोर्ट के अनुसार स्वास्थ्य तथा उत्तरजीविका के उपसूचकांक पर भारत पिछले एक दशक में दुनिया का सबसे कम सुधार वाला देश बना हुआ है। 149 देशों में भारत 142वें स्थान पर है, जिसमें शैक्षणिक उपलब्धि तथा आर्थिक भागीदारी एक प्रमुख आधार है। इसके अलावा अन्य–सर्वेक्षण तथा शोधकर्ताओं ने महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए उच्च शिक्षा के महत्त्व को दर्शाया है। यह सही है कि नयी पीढ़ी की महिलाएँ स्वयं को पुरुषों से बेहतर साबित करने का एक भी मौका गँवाना नहीं चाहती हैं, लेकिन गाँव और शहर की इस दूरी को मिटाना जरूरी है। गाँव हो या शहर बालिकाएं अभिभावकों के माध्यम से ही शैक्षिक लक्ष्य को हासिल कर पाती हैं, इसलिए अभिभावकों के मनोवृत्ति को सकारात्मक बनाना आवश्यक है।

प्रस्तावना

आज के प्रगतिशील आधुनिक समाज में महिलाओं की जो सम्मानजनक स्थिति बनी है वह उनके लिए उच्च शिक्षा की सुविधाओं तथा अभिभावकों

के सकारात्मक सोच के कारण है। भारतीय परम्परा में महिलायें अपनी संस्कृति, मूल्य, आदर्श, परम्परायें, समाज तथा परिवार से गहरा नाता रखती हैं। इन सभी का उनके जीवन में मायने हैं। इसलिए परिवार से व समाज से विलग होकर वे अपना आदर्श छवि नहीं बना पाती हैं। सामाजिक तथा पारिवारिक बन्धनों से जुड़कर ही वह अपने को परिपूर्ण मानती हैं। इसके विपरीत बिगड़ते सामाजिक परिवेश तथा बदलते नैतिक मूल्य से कदम–ताल मिलाते हुए फैशन परस्त महिलाओं के लिए धन कमाना ही मुख्य वसूल हो गया है। समाज उन्हें कभी भारतीय नारी की संज्ञा से विभूषित नहीं करता है। हालाँकि इन महिलाओं के 'केस स्टडी' से अन्य पक्ष सामने आते हैं, जो उनके नैसर्गिक स्वरूप को धूमिल करने के लिए पर्याप्त हैं। लेकिन प्रश्न यह होगा कि महिलायें इतनी कमजोर कैसे हुईं? शक्ति का स्वरूप मानी जाने वाली विलासी तथा अपराधिक प्रवृत्ति वाली क्यों हो जाती हैं? यदि इसके तह में जाते हैं तो यह पता चलता है कि उनकी सामाजिक परिस्थितियाँ तथा पारिवारिक परिवेश, स्नेह, सुरक्षा तथा सम्मान की तीव्र मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सफल नहीं रहा है। मैसलो के आवश्यकता पदानुक्रम के अनुसार प्रथम तीन–दैहिक, स्नेह तथा सुरक्षा सम्बन्धी आवश्यकता व्यक्ति के उत्तम विकास के लिए आवश्यक होता है। दैहिक आवश्यकताएँ यदि येन केन प्रकारेण पूरी कर दी जाती हैं तो भी स्नेह तथा सम्मान तो उसके संतुलित विकास के लिए आवश्यक पक्ष है। शिक्षित तथा सभ्य समाज महिलाओं के लिए सुरक्षित वातावरण तैयार कर सकता है, जबकि अशिक्षित परिवार महिलाओं के प्रति सहज स्वीकार भाव नहीं रखता है। इसलिए उनके लिए उच्च शिक्षा भी मुहैया नहीं करा पाता है। यदि महिलाओं की शिक्षा उत्तम तथा उच्च होगी तो समाज उनको वह लाभ दे सकेगा, जिनकी वह अधिकारी है। गाँधी जी का भी मानना था कि एक स्त्री को शिक्षित करना पूरे परिवार को शिक्षित करना है।

समाज की बुनियादी ईकाई परिवार है, जहाँ से प्रेरणा मिलती है और चुनौतियों से सामना करने के लिए ताकत भी। चुनौतियाँ हमेशा विकास

और प्रगति से ही जन्म लेती हैं। एक लड़की का पालन–पोषण किस प्रकार का होता है, इसी पर उसका भविष्य निर्भर करता है। विकसित नगरीय समाज में लैंगिक भेद कम दिखायी देता है; लेकिन अन्य ग्रामीण समाज में अभी लड़कियों के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति का अभाव दिखता है। जिन महिलाओं ने हर मोर्चे पर अपना विजय सुनिश्चित किया है, उनसे बातचीत के दौरान यह जानने को मिला कि उन्होंने अपनी माँ तथा अति निकट महिला संबंधियों को अपनी प्रेरणा का स्रोत माना है। यह खुशी की बात है कि महिलायें महिलाओं से ही अभिप्रेरित होकर लक्ष्य को हासिल कर रही हैं।

अध्ययन का औचित्य

अभी भी 'आधी आबादी' का प्रतिनिधित्व करने वाली महिलायें उच्च शिक्षा के क्षेत्र में काफी पीछे हैं। इसका वास्तविक कारण खोजकर तत्सम्बन्धी निवारण का उपाय खोजना होगा। परिवार कई स्तर के होते हैं। कहीं सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति में भिन्नता है तो कहीं शिक्षित और अशिक्षित परिवार हैं। परिवार चाहे शिक्षित हो या अशिक्षित, महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए सदैव ही प्रबल कारक रहा है। जहाँ तक उच्च शिक्षा का सवाल है, अभिभावकों के सहयोग के बिना महिलायें आगे नहीं बढ़ पाती हैं। वर्तमान के मिश्रित शहरी व ग्रामीण परिवेश में अभिभावकों की अपनी बालिकाओं के उच्च शिक्षा के प्रति कैसी मनोवृत्ति है ? इसके साथ ही साथ शिक्षित तथा अशिक्षित अभिभावकों का बालिकाओं के उच्च शिक्षा के प्रति क्या दृष्टिकोण है ? यह जानना आवश्यक है; क्योंकि इसी आधार पर उनकी मनोवृत्तियों का आँकलन कर जन–जागरूकता की ओर अग्रसर होकर अच्छा पहल किया जा सकता है। समस्या कहाँ है ? कितना है ? यह जानने के उपरान्त और भी सकारात्मक उपाय ढूँढ़ा जा सकता है।

अध्ययन की समस्या

'शिक्षित अशिक्षित अभिभावकों के छात्राओं की उच्च शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन।'

अध्ययन के उद्देश्य

शिक्षित अशिक्षित अभिभावकों का छात्राओं के उच्च शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

शून्य परिकल्पना

शिक्षित अशिक्षित अभिभावकों का छात्राओं के उच्च शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध–विधि

प्रस्तुत अध्ययन की शोध विधि 'वर्णनात्मक सर्वेक्षण प्रणाली' है, जिससे सम्बन्धित तथ्यों तथा प्रदत्तों को शीघ्रता एवं शुद्धतापूर्वक प्राप्त कर सही आँकलन किया जा सके।

अध्ययन के प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन के अन्तर्गत जौनपुर के शिक्षित तथा अशिक्षित कुल 50 अभिभावकों को सम्मिलित किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य में शिक्षित तथा आशिक्षित अभिभावकों के दृष्टिकोण को मापने के लिए 'स्वनिर्मित प्रश्नावली' का उपयोग किया गया है, जिसमें प्रश्नों की कुल संख्या 50 है।

सांख्यिकीय विधियाँ

उत्तरदाताओं द्वारा अर्जित अंकों के मध्यमानों के मध्य अन्तर की सार्थकता के लिए 'T-Test' का उपयोग किया गया है।

परिकल्पना से सम्बन्धित विश्लेषण व व्याख्या

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण	सार्थकता
शिक्षित अभिभावक	25	61.00	8.31	5.34	0.1 स्तर पर सार्थक
अशिक्षित अभिभावक	25	50.90	13.16		

व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि शिक्षित तथा अशिक्षित अभिभावकों की छात्राओं के उच्च शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अंतर है। शिक्षित अभिभावक बिना लिंग भेदभाव के बालिकाओं को उच्च शिक्षा ग्रहण कराना चाहते हैं, जबकि अशिक्षित अभिभावक लिंगभेदभाव के तहत शिक्षा देना चाहते हैं। स्पष्ट है कि शिक्षित अभिभावक की तुलना में अशिक्षित अभिभावकों की बालिकाओं की उच्च शिक्षा के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति धीमी है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

यद्यपि यह सही है कि अशिक्षित अभिभावकों का बालिकाओं के उच्च शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक नहीं है, लेकिन इस रवैये के पीछे अन्य कारण हो सकते हैं, जैसे– गरीबी, असुरक्षा का भाव, अवसर की अनुपलब्धता आदि जिसका समाधान हम देशवासियों को ही निकालना है, इसके लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संचालित कार्यक्रमों के अनुसार अल्पसंख्यक बहुल जिला, ब्लाकों में लड़कियों के लिए छात्रावास, स्कूल, विश्वविद्यालयों की स्थापना का प्रस्ताव दिया गया है, जिसका समुचित कार्यान्वयन आवश्यक है। उत्तर–प्रदेश सरकार ने 20 नवम्बर, 2018 को लखनऊ में नारी सशक्तिकरण संकल्प अभियान की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य राज्य में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार तथा स्वच्छता एवं पोषण जैसे कार्यक्रमों द्वारा महिलाओं का सशक्तिकरण करना है। भारत को गौरवयुक्त करने वाले स्वामी विवेकानन्द भी स्त्री–पुरुष में लिंग भेद को अस्वीकार करते हैं। उनके अनुसार,

परिकल्पना से सम्बन्धित विश्लेषण व व्याख्या

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण	सार्थकता
शिक्षित अभिभावक	25	61.00	8.31	5.34	0.1 स्तर पर सार्थक
अशिक्षित अभिभावक	25	50.90	13.16		

व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि शिक्षित तथा अशिक्षित अभिभावकों की छात्राओं के उच्च शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक अंतर है। शिक्षित अभिभावक बिना लिंग भेदभाव के बालिकाओं को उच्च शिक्षा ग्रहण कराना चाहते हैं, जबकि अशिक्षित अभिभावक लिंगभेदभाव के तहत शिक्षा देना चाहते हैं। स्पष्ट है कि शिक्षित अभिभावक की तुलना में अशिक्षित अभिभावकों की बालिकाओं की उच्च शिक्षा के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति धीमी है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

यद्यपि यह सही है कि अशिक्षित अभिभावकों का बालिकाओं के उच्च शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक नहीं है, लेकिन इस रवैये के पीछे अन्य कारण हो सकते हैं, जैसे– गरीबी, असुरक्षा का भाव, अवसर की अनुपलब्धता आदि जिसका समाधान हम देशवासियों को ही निकालना है, इसके लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संचालित कार्यक्रमों के अनुसार अल्पसंख्यक बहुल जिला, ब्लाकों में लड़कियों के लिए छात्रावास, स्कूल, विश्वविद्यालयों की स्थापना का प्रस्ताव दिया गया है, जिसका समुचित कार्यान्वयन आवश्यक है। उत्तर–प्रदेश सरकार ने 20 नवम्बर, 2018 को लखनऊ में नारी सशक्तिकरण संकल्प अभियान की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य राज्य में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार तथा स्वच्छता एवं पोषण जैसे कार्यक्रमों द्वारा महिलाओं का सशक्तिकरण करना है। भारत को गौरवयुक्त करने वाले स्वामी विवेकानन्द भी स्त्री–पुरुष में लिंग भेद को अस्वीकार करते हैं। उनके अनुसार,

''परब्रह्म तत्त्व में लिंगभेद नहीं'', 'आत्मा में जब किसी प्रकार का लिंगभेद नहीं तो स्त्री–पुरुष को लिंग–भेद के आधार पर बाँटना न्यायोचित नहीं है।' समाज को प्रेरित करते हुए उन्होंने लिखा है कि 'वर्तमान दशा में स्त्रियों का प्रथम उद्धार करना है, सर्वसाधारण को उठाना होगा, तभी तो भारत का कल्याण होगा।' अतः शिक्षित तथा अशिक्षित अभिभावकों की सोच को समानता के धरातल पर लाना है, जिससे बालिकाओं को उच्च शिक्षा तथा अन्य सुविधाओं का लाभ मिल सके, जिसकी वे अधिकारिणी हैं। जिससे देश दो पहियों वाले रथ से सरपट अपने विकास की राह पर आगे बढ़े।

सन्दर्भ सूची

1. सिंह वी.एन. एवं सिंह जनमेजय, **'नारीवाद'** प्रथम संस्करण, वाणी प्रकाशन 2001, नई दिल्ली, पृ. 231, 285, 398।
2. किशोरराज, **'स्त्री परम्परा और आधुनिकता'** प्रथम संस्करण, वाणी प्रकाशन, 2007, नई दिल्ली, पृ. 7, 11, 21, 34।
3. सिंह वी.एन., **'आधुनिकता एवं नारी सशक्तिकरण'**, रावत पब्लिकेशन, 2010, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ. 189–206।
4. पांड्या चंद्रकला, **'चिन्तन–सृजन'**, आस्था भारती, दिल्ली, जून 2005, पृ. 29।
5. **समसामयिकी महासागर**, फरवरी, 2019, पृ. 31, 34।
6. **समसामयिकी क्रानिकल**, फरवरी, 2019, पृ. 12।
7. विवेकानन्द, **'विवेकानन्द साहित्य'** दशमखण्ड, अद्वैत आश्रम, कोलकाता, 1985, पृ. 265।

✦✦✦